

हरी खाद का उपयोग

शिवेंद्र कुमार सिंह^१ आलोक पटेल^२ रत्नालिका मौर्य^३ विनायक कुमार मौर्य^४ केदार महादेव घेवारे^५

परिचय:-

हरी अवस्था में फसलों को जमीन में पलटाई एवं जुताई करके पानी लगाकर सड़ाने की प्रक्रिया को हरी खाद बनाना कहते हैं। इससे बने वाली खाद को हरी खाद कहते हैं। हरी खाद बनाने के लिए ज्यादातर दलहनी फसलों का प्रयोग किया जाता है।

⇒ हरी खाद बनाने की प्रक्रिया

➤ बीज की मात्रा

हरी खाद के लिये जिस फसल का चुनाव किया जाता है उसका सामान्य बीज दर से डेढ़ से दो गुना ज्यादा बीज हरी खाद के लिये प्रयोग किया जाता है।

➤ बीज शोधन:

हरी खाद बनाने के लिये बोई जा रही दलहनी फसलों को उसके राइजोबियम कल्चर 20 ग्राम / किग्रा. से शोधित करके बुआई करते हैं।

➤ बोने का समय

हरी खाद बनाने के लिये फसलों की बुआई गर्मी एवं बरसात में करना ज्यादा लाभदायक होता है। इस तरह उपयुक्त समय मई से जुलाई तक ठीक रहता है।

➤ हरी खाद की पलटाई:

ज्यादातर फसले ४५-५० दिन में तयार हो जाती है। उस समय इनको मिट्टी पलटने वाले डिस्क हैरो से काटकर मिट्टी में मिला देना चाहिए।

➤ यूरिया या जिप्सम मिलाना

२० किग्रा यूरिया या ४०० से ५०० किग्रा जिप्सम प्रति हेक्टेयर क्षेत्र में छिड़क देते हैं।

➤ पानी पलटाई के बाद पूरे खेत में पानी भर देते हैं।

➤ पाटा चलाना इसके बाद पाटा चला देते हैं।

➤ जुताई-बुआई खेत की जुताई बुआई अपने सुविधानुसार करते हैं

⇒ हरी खाद के लिये उपयुक्त फसलें

(तालिका १ देखें)

⇒ हरी खाद के लाभ

☞ वायुमण्डलीय नाइट्रोजन का जमीन में स्थिरीकरण होता है।

☞ जीवांश पदार्थों की मात्रा मिट्टी में बढ़ती है।

☞ मिट्टी की संरचना में सुधार होता है।

☞ पोषक तत्वों का संरक्षण होता है।

☞ उसर सुधार होता है।

☞ खरपतवार कम होते हैं। मिट्टी का कटाव रुकता है।

☞ हरे पदार्थों के सड़ने से मिट्टी में कार्बोनिक अम्लक निर्माण होता है जिससे फॉस्फोरस,

शिवेंद्र कुमार सिंह^१ आलोक पटेल^२ रत्नालिका मौर्य^३ विनायक कुमार मौर्य^४ केदार महादेव घेवारे^५

^१ मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विज्ञान विभाग प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया विश्वविद्यालय प्रयागराज)

^२ मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विज्ञान प्रभाग शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय जम्मू

^३ उद्यान विभाग प्रो. राजेंद्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय प्रयागराज

^४ मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विज्ञान विभाग प्रो. राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय प्रयागराज

^५ फूलों की खेती और भूदृश्य प्रभाग, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय जम्मू अनुरूपी लेखक ईमेल आईडी

मैग्निशियम कैल्शियम आदि पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ती है।

- ☞ मिट्टी में लाभदायक सूक्ष्म जीवों की संख्या में वृद्धि होती है।
- ☞ मिट्टी में वायु एवं जल का आवागमन बढ़ाता है।

तालिका १: हरी खाद के लिये उपयुक्त फसलें

दैचा	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
20 से 25 टन	84 से 105 किग्रा
सनई	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
20 से 30 टन	86 से 129 किग्रा
लोबिया	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
15 से 18 टन	74 से 88 किग्रा
मूँग	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
8 से 10 टन	38 से 48 किग्रा
उर्द	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
10 से 12 टन	41 से 49 किग्रा
ग्वार	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
10 से 11 टन	60 से 62 किग्रा
कुल्थी	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
8 से 10 टन	26 से 33 किग्रा
नील	
हरा पदार्थ प्रति हेक्टे	नाइट्रोजन प्रति हेक्टे
8 से 10 टन	62 से 78 किग्रा

